R.N.I.- UP-
HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

अंजू भारती पर विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 14 | रविवार, इलाहाबाद, 18 अगस्त 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार अंजू भारती

छुटपन की प्यारी वो यादें,
सखियों संग के वो वादें ।
बात-बात पर लड़ना-झगड़ना ,
करना फिर सबसे फरियादें ।

बालपन के मनोविज्ञान को व्यक्त करती उक्त कविता की पंक्तियां कवियित्री अंजू भारती के काव्य जगत के उस लिफाफे को खोलतीं हैं जिसमें प्यार, दुलार, मनुहार, हार-जीत, लड़ना-झगड़ना यानी बाल मन के उन सारे वृत्तियों का पट खोलती हैं । पटना में पढ़ी बढ़ी कवयित्री अंजू भारती के पिता बड़े साहित्यकार थे । पिता की विरासत को आगे बढ़ते हुए

कवयित्री अंजू भारती ने रेडियो, वार्ता, रंगमंच, हर क्षेत्र में अपनी योग्यता के अनुसार कार्य किया । उनकी कविताओं में निराले भाव का दर्शन होता है ।
कुछ पंक्तियाँ देखिए-
पहली बानगी-

ऋतु आया लिए नये ख्वाब
देखो आया बागों में लाल गुलाब
महकी बगिया उसकी खुशबू से
दिल होता छूने को बेताब

दूसरी बानगी-

आज तुम विचार लो
बाग को संवार लो
जीवन है इसे ही
हरित कर बहार लो

तीसरी बानगी -

छल कपट से हम तो क्या डरती है दुनिया
ईमानदारी पर लोगों की मरती है दुनिया
अच्छे लोगों का हमेशा होता है सम्मान
उनका कभी भी कोई नहीं करता अपमान

कवयित्री अंजू भारती ने गद्य-पद्य दोनों विधाओं में खूब लिखा है । **अगस्त** माह का **सावित्री देवी स्मृति सम्मान** देते हुए संस्था प्रफुल्लित है । संस्था आशावान है कि अंजू भारती की रचना धार्मिता निरंतर आगे बढ़े । अंक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरूर दें ।
अंत में -

लिख-लिख कर पोथी-पोथा,
सबने बहुत बात बताई है ।
हम भी लिखने लगे बहुत कुछ ,
जगत में क्या-क्या भलाई है ।

उमेश श्रीवास्तव

मेरे साहित्य का यात्रा वृतांत

अंजू भारती की कलम से

साहित्य मुझे विरासत में मिली है इसलिए मेरी साहित्यिक यात्रा में बहुत ही सहायता हुई मैंने अपनी आंखें साहित्य के आंगन में ही खोली मेरे पिताजी आदरणीय स्वर्गीय श्री सत्यदेव नारायण अस्थाना जी बहुत ही बड़े साहित्यकार थे और उनकी लेखनी अद्भुत थी उनके ऐसा तो अभी नहीं लिख पाती हूं पर कोशिश करती हूं अवश्य हूं उनका। छुट्टन से ही मैं आकाशवाणी पटना से जुड़ी रही आकाशवाणी के जितने भी बाल कार्यक्रम होते थे बाल मंडली ,शिशु महल, घरौंदा मैं नियमित उसमें जाया करती थी। अपनी तोतली बोली से ही शुरू किया था मैंने यह कार्यक्रम और फिर धीरे-धीरे जैसे-जैसे मैं बड़ी होती गई यूं कह लीजिए की साहित्य की ओर मेरा रुझान होने लगा और मैंने धीरे-धीरे लिखना शुरू किया। जब मैं क्लास सिक्स्थ में थी तो मैंने एक कहानी लिखी थी उस कहानी को पढ़कर पापा इतने खुश हुए कि मैं बता नहीं सकती और इसी तरह छोटी-मोटी आलेख वगैरा लिखना शुरू किया मैंने जो मेरे मन के अंदर के भाव होते थे उसे बस मैं पन्नों पर लीखती जाती थी और वह कभी पेपर में कभी किसी मैगजीन में और कभी आकाशवाणी में मेरी आवाज में प्रस्तुत हुआ करता था। फिर मैंने नाटकों में भाग लेना शुरू किया मैं स्टेज मंचन किया मैंने चरित्र अभिनेत्री की भूमिका निभाई फिल्मों में दूरदर्शन में और मंच पर भी। जब मैं बड़ी हुई तो मैं आकाशवाणी पटना में नैमित्तिक कंपीयर बनी और आज तक हूं ।साथ-साथ मैंने अपनी पढ़ाई भी जारी रखी मैंने ग्रेजुएशन के बाद एम ए किया,एल एल बी किया। मैंने डेयरी डेवलपमेंट कोर्स लाइब्रेरी साइंस की पढ़ाई की। मैंने एडवोकेसी के साथ-साथ अपने साहित्यिक यात्रा भी जारी रखी ।मेरी लगभग 40 साझा संग्रह दो एकल पुस्तक प्रकाशित हुई है और दो एकल पुस्तक प्रकाशाधीन है। मुझे हजारों सम्मान मिले हैं मैं किसी एक सम्मान के बारे में जिक्र नहीं करना चाहती क्योंकि सभी सम्मान मेरे लिए बहुत ही महत्व रखते हैं और हजारों सम्मान का जिक्र करना संभव नहीं है । मेरी साहित्य की यात्रा में बहुत सारे साहित्यिक मित्र मिले। मुझे कवि गोष्ठी में जाना अपनी कविता को सबों को सुनाना अपने भावों को पन्नों पर उकेरना अपनी लिखी कविता को गाकर रिकॉर्ड करना उसका वीडियो बनाना लोगों को सुनिना मंच पर प्रस्तुति देना बहुत ही भाता है। मैं जब प्रस्तुति दे रही होती हूं तो मैं बता नहीं सकती मेरे मन में कितने भाव कितने अच्छे-अच्छे भाव उमड़ते हैं जिसे मैं अगर प्रस्तुति के वक्त ही लिखना शुरू करूं तो पता नहीं कितना लंबा समय तक चलता रहेगा। मेरे मन में जो भी आता है जैसे भी आता है मैं उसे उसी रूप में पन्नों पर उकेरना उचित समझती हूं क्योंकि मुझे लगता है कि भावों सीधे-सीधे पन्ने पर उकेरना सही साहित्य है। साहित्य में अगर बनावटीपन आ जाए वह साहित्य की गिनती में नहीं आता है। पर मैं यह भी कहूंगी कि सही साहित्य वही होता है जिसमें व्याकरण की शुद्धियां हो लिखते समय हमेशा व्याकरण को ध्यान में रखना चाहिए छंद अलंकार ध्यान में रखना चाहिए । मुक्त छंद हो तो कोई बात नहीं यदि छंद युक्त कविता हो तो उसके छंदों में त्रुटियां नहीं आनी चाहिए। मेरी कविताएं अधिकतर छंद मुक्त ही हुआ करती हैं क्योंकि मुझे छंद मुक्त कविता बहुत अच्छी लगती है और इसमें भावों को सही-सही उकेरा जा सकता है। अभी मेरी यात्रा बहुत ही लंबी है क्योंकि साहित्य का कोई ओर छोर नहीं होता इसलिए अनवरत इस पर चलने की निरंतर कोशिश करती रहती हूं बस आप सबों का साथ आप सबों के आशीष आप सबों की शुभकामना की जरूरत है आप सभी इसी तरह साथ बने रहे मेरा सफर यूं ही आसान हो जाएगा और साहित्य के साथअपने को मुकाम तक पहुंचाने की कोशिश करूंगी।

अंजू भारती की कविताएँ

सिर्फ़ तेरे पास

बीता लड़कपन खेल खेल में
बड़ी हुई मैं पढ़ लिख लिख पढ़
पर आया ईक दिन भी वहां पल
कहां किसी ने आकर मुझसे

आया है कोई लिए साथ में
रिश्ता एक सुनहरा तेरे लिए
बता नहीं सकती मैं वह पल
रोम-रोम था कितना पुलकित

सुनकर उसकी बात
आया है सौगात
आया है कोई लिए साथ में
रिश्ता एक सुनहरा तेरे लिए

फिर आया था वह पल
जब के लिए फेरे साथ
तुम लाए थे सौगात
निहाल होती थी मैं तेरे लिए

गोद भरी विश्वास लिए मैं
लिए नमन प्रमुदित शोभित मैं
मधुर भावनाओं के संग
चली साथ में साथ सिर्फ तेरे लिए

रिश्ता दोस्ती और प्यार की पहचान
पाई मैंने तुम्हीं से
जाना कैसे निभाते हैं रिश्ते
सपने संजोए भी थे तेरे लिए

पर जो भीतर है मेरे मन में
उसे बताना शेष है अभी
उसका रंग चढ़ाना है बाकी
मिलेगा अवकाश तो बताऊंगी उसके राज

मेरी इच्छाओं को तुम
रखना अपने पास बांधकर
रखना मेरा विश्वास
क्योंकि मैं आई हूं
सारा जग छोड़ के सिर्फ तेरे लिए

कितना पवित्र रिश्ता होता है
न रह पाते तुम और न छोड़ पाती मैं
लगता है अग्नि के फेरे ने
शुद्ध कर दिया तन मन को सिर्फ तेरे लिए

मेरी इच्छा है मैं हर जनम जिऊ तेरे साथ
जब आंखें खोलू तो तुम हो पास
और जब अंतिम सांस लू
तो भी तुम हो आस पास

प्रकृति ने फिर से दिया वरदान
रहो अब सब मिलजुल के पास
बिताओ अपने दिन और रात
करो पक्का मन का विश्वास
रहूंगी अब मैं तेरे पास सिर्फ तेरे लिए

प्रकृति

आज तुम विचार लो
बाग को संवार लो
जीवन है इसे ही
हरित कर बहार लो

सतरंगी फूलों के
होते फायदे अनेक
धरती भी इसे है
इसे पहचान लो

आओ चले आज हम
पेड़ों से छानकर जो आती
सूर्य की किरणों को
आंचल में भरकर प्रेम की बहार लो

वसुंधरा के इस गहने को
रूप और श्रृंगार कर
इसकी सुंदरता को
और तुम निखार लो

लाल गुलाब

मेरी बगिया के शोभा है
यह सुंदर लाल गुलाब
आओ हम इसे देखकर
आज देख नए ख्वाब

घर की सुंदरता बढ़ाता
हर ओर महकता लाल गुलाब
करते हम सब मिलकर पूरी
अपनी इच्छा आज जनाब

कलियों संग खेले अठखेली
रहता उसके संग यह लाल गुलाब
देख देख कर ऐसा लगता
दिल होता छूने को बेताब

इसके रंग से बढ़ती सुंदरता
बगिया का मान रखता लाल गुलाब
शेरवानी की शोभा बढ़ाता
लगता जैसे आया नवाब

प्रकृति का उपहार

ऋतु आया लिए नये ख्वाब
देखो आया बागों में लाल गुलाब
महकी बगिया उसकी खुशबू से
दिल होता छूने को बेताब

बगिया का जैसे रंग बदला
देख गुलाब मन भी मचला
सौंदर्य बढ़ गया उपवन का
आया देखो दिन मधुबन का

भंवरा जैसे उसे देख रहा
लगता की कुछ उससे सीख रहा
कांटों में भी मुसकाता वह
एकता का पाठ पढ़ाता यह

लगता कितना सुंदर लाल गुलाब
करते उससे सभी अनुराग
सब की किस्मत का खोलता द्वार
आज प्रकृति से मिला है उपहार

कैसे हो तुम लाल गुलाब

जब लाल गुलाब बाग में आती
बागों की शोभा है बढ़ाती
हर रंगों में तू रंगी है
सबके दिल में तू बस जाती

दुखी मन को है बहलाती
अपने संग उसे हंसाती
देती सबको हमेशा सहारा
सपने भी पूरे करवाती

रहती है तू कांटों के संग
तेरा प्यार भरा यह ढंग
देख देख मन विचलित होता
क्या कांटे करते नहीं तुझे तंग

यादें

आगे बढ़ाने की सीढ़ी है यह
एक नहीं कई पीढ़ी है यह
अच्छे सोच भले कामों में
मिल जाता यह बिन दामों में

यादें सहेज कर रखना तुम
जिससे सीखे बच्चे और हम
इसकी अच्छाई रख पास अपने
शायद काम आए करने पूरे सपने

यादों के झरोखे बीच बैठ
जहां कोई नहीं वहां तेरी पैठ
इसकी पोटली खोलना नहीं
इसके बारे कभी बोलना नहीं

यादें ही आगे ले जाती
हम सबको बहुत कुछ सिखलाती
सबके यह भेद है बतलाती
यादें हंस करके इठलाती

आओ खोलें इन यादों को
अपने किए कराए वादों को
नेक सकारात्मक इरादों को
केवल अपनी नहीं बात पर दादों का

यादें - 2

अब याद इन बातों में से
बंध कर रह जाती है
बीते दिनों की छवि और बातें याद आतीं हैं
दोहरा मापदंड और भावनाएं चिढ़ाती हैं
यादें हृदय में उथल-पुथल मचातीं हैं

सुनहरी यादों के साथ
आगे चल सकते हैं हम
यदि दृढ़ निश्चयी हो तो
नहीं पड़ोगे कम
हमेशा काम पूरा करना
तब लोगेआप दम
बस आगे बढ़ते जाओ
मंजिल मिलेगी नहीं रूकेगा कदम

देखते हैं बहारें टकटकी लगाए राह
तुम आगे संभल कर चलना
लोग भरतें हैं आह

यादों में भी सकारात्मक सोच ही
आगे बढ़ती है
नकारात्मकता पीछे तुम्हारे राह पड़ती है
कुछ करना है तो अच्छा करो व्यवहार
इससे ही बनेगा तुम्हारा आधार

ताता थैया

कहते थे पापा और भैया
पहले सब कुछ आता था
आना दो आना और रुपईया
पहले तो केवल था सवैया

स्वच्छ वातावरण सुंदर जीवन
सब साथ रहते मिलने सबका मन
कहीं चिड़ियां चुनगुन का शोर
कहीं दिखता बारिश में नाचता मोर

कितना नेशन कितना पावन
चमकीला था सभी का यौवन
वन उपवन भरे फूलों से मस्त
कुछ भी खा लो रहते थे स्वस्थ

यादें आती पुरवइया की
कुछ खरीदनी नई सवैया की
नाचती बहन थी ता थैया
दौड़ा दौड़ा आता भैया

मान गढ़ाइए

यादों को समेटकर, उससे लिपटकर
यादों की पतली को ले आप चले आइए

बीता पल साथ लिए, हम साथ चल दिए
कुछ खट्टे कुछ मीठे, उसे अपनाइए

आह नहीं भरो कभी, ईच्छा पूरी होंगी तभी
सत्य राह पर चल , शान को गढ़ाइए

भारत बहुत प्यारा, यहां का तिरंगा न्यारा
उसको संभाल कर, मान को बढ़ाइए

सावन के झूले

आते बरसात सभी का मन है डोले
सखियों संग जाकर बागों में
आओ झूला झूले
यह बूंदे जब पड़ती मन पर
तन पर मन हर्षाता
मन झूम झूम झूलों पर
बैठ गीत गाता

मानों धरती में पहन लिया चुनरी धानी
बारिश की बूंदे भी करतीं हैं मनमानी
सूखी नदियां अब उमड़ उमड़ इठलाती हैं
धरती रानी मनप्रीत मिला बलखाती है

आया सावन हुलसा उपवन
मन हरित हुआ खिल यौवन
झूलों पर बैठ लगाए पेग नाचे तन मन
देखो वन में है मोर नाचते सननन

बचपन

छुटपन की प्यारी वो यादें
सखियों संग के वो वादे
बात-बात पर लड़ना झगड़ना
करना फिर सबसे फरियादें

गुड़ियों का वह ब्याह रचाना
जयदकर मन से बातें मनबाना
कागज की नाव बनाकर
कभी रूठना कभी मनाना

सहेलियों सॉन्ग खेल खेल कर
लड़ाई झगड़ा झेल झेल कर
फिर जज बनकर राह बनाना
पल में हंसकर फिर मेलकर

आसमान में तारे गिनना
उसमें ध्रुव तारा को चुनना
छत पर करना धम्मा चौकड़ी
याद आती खाना निमकौड़ी

याद आता वह प्यार बचपन
साज सावरकर खेलने बनठन
फिर फिर अम्मा से दांत वह खाना
अंतिम लोहिया रोटी बनाना

बारिश

आओ इस बारिश हम दोनों
इसकी बूंद से अब खेलें
बारिश में हम पेंग बढ़ाकर
धरती से आसमान को छू लें

घोर तपिश के बाद सुनहरा
अब यह मौका यह आया है
बारिश की बूंदों ने हम सबके
मन को बहुत ही हर्षया है

पत्तों को बनाकर छतरी
देखें हम सब भींगे नभ
आंख मूंदकर चेहरे पर
उसकी बूंदे संग खेलें अब

उसकी बूंदे जब गिरती है
मन आह्लादित करती
हृदय खुशी से भरता है
पत्तों की छतरी से गिरती

बारिश की बूंदो ने ठंढक पहुंचायी
नभ ने क्षिति को बूंदों से शीतल करवायी
आकाश हुआ पानी पानी
धरा हरित हो इठलाई

जहिया से पिया तुम

जहिया से पिया तुम
गइल परदेसवा
मन तो छोट भाई छूट रहल असवा

हरी हरी बूंद पड़ेला ढाबर चुनरी
भींजे ए हरी
बरस बीत गईल सजना न अईले कैसे सिंगार हम करी
सालेला करेजवा राम बूंद के आवाज सुनी
कि अब पेठाव यही बरसात मोर
सजनवा रे हरी

अबकी सवनमा पिया दीह हर्षाय हिया
कि अब त रोज चिढ़ावे आवे
बूंद आंगनवा हरी
देख के आज बदरिया याद आवे
तोरी सुरतिया
कि अब त जल्दी से पिया घर पेठाव ए हरी

जब झूले बाग में सखियां
देख के भरे मोर अखियां
जहिया से गैला पिया तू परदेसवा
कि अब त पिया के बुला के
पुराव असवा ए हरी

विरह बरसाती

बरस के ये बूंदे कोई एहसास दे जाए
कोई आएगा आज अंगना यह
एहसास दे जाए

पिया मोरे हैं परदेस बसे
उनके आवन की आस जगे
ऐ काली बदरिया जाकरके
उन्हें ले आओ विश्वास आए

यह मीठी सुनहरी बूंद भी अब तो
तरसाए सावन की झूला भी अब तो मन ना भाए

लगाया आंखों में कजरा में
नितिन बदरी छाई है
जो इस बरसात आ जाओ
मेरे दिल में जो समाए

रो रो के में थक गए
कि अब कुछ भी नहीं दिखता
यह दिल कहता है
इस बरसात में मेरा पिया आए

दस्तूर

छल कपट से हम तो क्या डरती है दुनिया
ईमानदारी पर लोगों की मरती है दुनिया
अच्छे लोगों का हमेशा होता है सम्मान
उनका कभी भी कोई नहीं करता अपमान

अच्छाई को दबाना हीं दुनिया की है रीति
सभी को नहीं भांति एक दूसरे की प्रीति
किसी का काम होता है लोगों को तोड़ना
और कोई हमेशा करता है
काम सबको जोड़ना

कोई भी देख कर नहीं सीखता
मिलता है संस्कारों से
किसी की अच्छाई को नहीं मापा जा सकता आकारों से
सीखने सिखाने की कोई उम्र सीमा नहीं होती
जिस तरह कितना जीना है
उसकी कोई बीमा नहीं होती

इस बदलती दुनिया में नए-नए आयाम है
किसी का बहुत बड़ा तो
किसी का छोटा सा काम है
सभी के काम बहुत ही अनमोल है

अंजू भारती की कविताएँ

किसी के भी काम
इतनी आसान नहीं बिना दाम है

कभी किसी पर मत करो दोषारोपण
अपनी बातों से किसी का भी
मत करो सोषण
हमेशा सबों को नहीं राह दिखाने की
होनी चाहिए कोशिश
आदमी तभी स्वस्थ रह सकता है
जब उसे भरपूर मिले पोषण

मतदान

लोकतंत्र के लाज बचाओ
करो देश का सम्मान
अब तो घर से निकलो भैया
करने को मतदान
अपनी बुद्धि विवेक लगाओ
करो तुम सबका कल्याण

देना तुम उनको ही वोट
जो न कर आत्म सम्मान पर चोट
भ्रमित ना होना डरना मत तुम
मतदान करो उसको
जिसके मन में ना हो खोट

करो देश का तुम सम्मान
नहीं करो उसका अपमान
काम आएगा घर से निकलो
जाकर जल्दी करो मतदान

यह देश हमारा है आधार
आप देश के बनें कर्णधार
कर मतदान तू सही प्रकार
दे मतदान लोकतंत्र समाज संभार

बेलपतवा

हरि हरि पतवा लेके बेल पतवा
ओपर लिख के राम नाम
हम चढ़ाएव भोलेनाथ के
भर सावन सुबह शाम

लोटवा में दूध लेके
ओकरा में मधु मिलाके
जल ढारब बाबा के नाम
बेलपतवा चढ़ाएव लिख के राम नाम

धतूरा के फूल बाबा के बड़ी मन भावे
बेल और धतूरा बाबा के बड़ी ही सोहावे
फूल प्रसाद चढ़ाएं बाबा के नाम
हम बेलपतवा चढ़ाएव लिखके राम नाम

नंदलाल

मां यशोदा के प्यारे नंदलाल
उनकी बांसुरी के मोहक सुरताल
राधा बिन अधूरे हैं बांके बिहारी
कान्हा की लीला के बहुत ही कमाल

बंसी बजैया के मधुर हैं तान
धुन सुन तृप्त होता मन प्राण
बंसी धुन उनके सभी हैं दीवाने
प्यारे मुरलीधर कैसे करूं गान

कान्हा तुम प्यारे यशोदा नंदन
तुम्हें पाकर धरती हुई धन धन
मुंह खोल मैया को दिखाया ब्रह्मांड
तुम ही हो कान्हा राधा की धड़कन

हर्षित धरा

चारों ओर फैली हरियाली
मौसम ने अपना रंग बदला
आदित्य भी करवट बदल
अपनी रश्मियां बिखेर रहा
देखो धरा सुरभित है अनुपम है श्रृंगार
देख रहा चकोर चांद को अद्भुत है श्रृंगार

मौसम का प्रभाव दिखलाती कृपा अपरंपार
शीतलहर अब दूर भई चला गया उस पर
चंचल नयन निहार रहे धरा को बारंबार
मधुरिम बेला आने को मचल रही इस बार

विचरण करते पक्षी गण उन्मुक्त गगन में
देखो बादल मचल रहे अपनी धुन में
तारों ने करवट बदली प्रसन्न हो मन में
चले पवन पुरवइया झूमता अंतर मन है

रंगोली

रंगोली के रंग बहुत मन भाते हैं
रंगोली खुशियों को भर भर लातें हैं
बनती रंगोली हमजोली के संग
इसमें डालें जीवन के बहुतेरे रंग

मां मुझको सिखाओ रंगोली बनाना
मुझे भी है तेरे संग इस घर को सजाना
रंगोली संग खुशियों का जाना और आना
मां मुझको भी है आज रंगोली बनाना

कहती रंगोली पहले खींचों तुम दीवारें
फिर आकार दो इसमें चांद और तारे
रंग-बिरंगे रंगों से इसको तुम सजाओ
फूल तितली और चिड़िया भी बिठलाओ

सब मिलकर के भरेंगे तुम्हारे जीवन में रंग
खुश रहना तुम अपनी हमजोली के संग
रंगोली होती शांति का प्रतीक
देख कर तुम भी बनाना सीख

रंगोली के परंपरा है अति प्राचीन बेटा तुम इसमें रंग डाल
ना नए नवीन सभी रंगों का मेल सुनहरा लगता है बना
रंगोली शुरू करना इससे ही दिन

सरस्वती वंदना

हे मां सरस्वती श्वेत पद्मासिनी
वीणा धारिणी सुन ले मेरी पुकार
मैं वाणी की अमृत धारा ले संग आयी तेरे द्वार
मां आज शरण ले ले मुझको तू सब का आधार

तू ज्ञान की झील आकाश का तारा
मां तू ही है हम सब का सहारा
तेरे संरक्षण में माता चलती आज कलाम की धारा
मां मेरा साहित्य तुम्हीं से है तू हीआधार

हे हंस वाहिनी वीणा वादिनी
तुम ही हो विद्या की प्रेरणा
श्रोत
संगीत तुम्हारे कण-कण यूं बसता है
जैसे सागर में सीप समाहित होता है

हे वीणा वादिनी हंसराजीनी मां सुन ले
हम सब में मां साहित्य समाहित तू कर दे
तू सब की है कल्पना का उज्जवल प्रवाह
मां बढ़कर तू शिक्षा का संरक्षण कर दे
हे मां भारती मांगती हाथ जोड़ सुन ले बढ़कर
आशीष भरा यह हस्त हमारे मस्तक रख दे
यह कमल विराजिनी हंस वाहिनी विनती सुन ले
हम बच्चों से जो हुई गलती उसको भी तू चुन ले

शाश्वत

जीवन का यह नियम मृत्यु सत्य है
कोई इससे बच पाता यह भी असत्य है
सब कुछ यहां धरा रह जाता
साथ में कोई कुछ भी नहीं ले जाता

मृत्यु का समय कोई जान ना पाया
कोई भी इससे अछूता कहां रह पाया
मिला जन्म तुम भोगो इसको
जीवन ने हर किसी को है यही सिखाया

जब मृत्यु निकट आ जाती है
स्थिति विकट छठ जाती है
सब कुछ आसान हो जाता है
तब मृत्यु सत्य नजर आती है

सिर पकड़ कर बेटा रोए
पैर पड़कर तिरिया रोए
रहे बिलखते पास पड़ोसी
सब रिश्ता यही पर खोए

जब तक जीवन है प्राण है तन में
मिल बांट रहो आपस तन मन में
ना तू जाता साथ यह धन है
सब रह जाता यही अपनापन है

पटना से बेंगलुरु की हवाई यात्रा

संस्मरण

सुखद संयोग टिकट कटा था दिल्ली जाने का कंफर्म नहीं हो पाया था और दोनों बच्चों में बातें हो रही थी की टिकट कंफर्म नहीं हो पाया है तो मम्मी बेंगलुरु आ जाए दोनों मिलकर टिकट देखने लगे और संयोग देखिए दिल्ली का टिकट कंफर्म नहीं हुआ बेंगलुरु का टिकट मिल गया और हम लोग बस लग गए बेंगलुरु जाने की तैयारी में। रात बेंगलुरु आने की तैयारी में ही बीती। हम लोगों ने पैकिंग वगैरह किया फिर सुबह हुई और हम सब निकल पड़े एयरपोर्ट की ओर बहुत सुंदर पटना का नजारा पटना बहुत ही बदल चुका है ।हम लोगों ने जैसी कल्पना की थी 20 वर्ष पहले कि पटना ऐसा होगा वैसा होगा एयरपोर्ट जाने का रास्ता भी बहुत ही आसान होगा रोड चौड़ी हो जाएंगी आवागमन का साधन बढ़ जाएगा कहीं भी आने जाने में बहुत देर नहीं लगेगी वेट नहीं करना पड़ेगा और जाम से बचेंगे सचमुच हम लोग पटेल नगर से अपनी गाड़ी से एयरपोर्ट के लिए निकले रास्ते भर हम लोग हंसी मजाक करते हुए आखिरकार एयरपोर्ट पहुंचे। वहां पर हम लोगों ने चेकिंग कराया बहुत अच्छा लग रहा था बहुत सुंदर साफ सुथरा एयरपोर्ट बहुत अच्छा नजारा था काफी कुछ बदल गया था समय के साथ आखिरकार वह समय आ गया जब हम लोग फ्लाइट पर सवार होने के लिए बस द्वारा फ्लाइट के करीब जा रहे थे बहुत ही रोचक दृश्य था वह बहुत सारे प्लेन एयरपोर्ट में खड़े थे और बहुत सुंदर लग रहा था बहुत ही बड़ा बहुत लुभाने सुहावना हमारा पटना बहुत ही सुंदर लग रहा था बस फ्लाइट की सीढ़ी तक पहुंची ।हम लोग सीढ़ी चढ़ फ्लाइट के अंदर जा रहे थे एयर होस्टेस हम लोग का वेलकम कर रही थी बहुत बढ़िया परिधान लग रहा था उन लोगों का उन लोगों ने स्कर्ट और टीशर्ट पहन रखा था और बहुत ही सुंदर मुस्कान के साथ सभी का स्वागत कर रही थी हम लोग अपने सीट पर जाकर बैठ अनाउंसमेंट हो रहा था की किस तरह से अपने आप को तैयार करना है ।पटना से हवाई यात्रा द्वारा बेंगलुरु जाने का बहुत अच्छी व्यवस्था थी उसमें कोल्ड ड्रिंक कॉफी चाय खाने के समान और अपना लगेज रखने की भी अच्छी व्यवस्था थी हम लोग अपने सीट पर बैठ चुके थे। खिड़की से बाहर का नजारा दिख रहा था। आखिरकार फ्लाइट ने अपनी उड़ान भरी और हम सब आकाश मार्ग से बेंगलुरु की तरफ जाने लगे रास्ते भर वह बहुत ही लुभावना दृश्य वह ढाई घंटे का रास्ता किस तरह कट गया हम लोगों को पता ही नहीं चला और धीरे-धीरे हम लोग बेंगलुरु एयरपोर्ट पर लैंड करने लगे रात होने को आई थी चारों तरफ बत्तियां जल रही थी अभी हम लोग आकाश मार्ग के रास्ते ही थे नीचे बतियों की जगमगाहट इतने सारे बिल्डिंग लग रहा था जैसे सारे आपस में मिलकर बतिया रहे हैं और हम लोगों के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं बहुत ही बढ़िया लग रहा था धीरे-धीरे हमारा फ्लाइट लैंड कर रहा था। घोषणा हो चुकी थी सभी अपने बेल्ट को अच्छी तरह बांध लें हम सभी लैंड कर रहे हैं और बहुत मजा आया पता ही नहीं चला कब

फ्लाइट लैंड हो गया और हम सब बाहर के रास्ते की ओर जाने को अपने-अपने छोटे-छोटे लगेज को लेकर सीढ़ी की ओर जाने लगे। बहुत बढ़िया लग रहा था बहुत सुंदर साफ सुथरा बेंगलुरु एयरपोर्ट और यहां के मौसम का क्या ही कहना। पटना में वह भीषण गर्मी और यहां पर बहुत ही फ्लीज़ेंट लग रहा था। हम लोग जहां पर सामान आता है वहां पर जाकर खड़े हो गये और सामान अपने गोल चक्कर के साथ वहां पर आता जा रहा था सभीअपने-अपन सामान ले रहे थे मुझे लग रहा लगा लगभग 10 मिनट लगे होंगे मेरा भी बैग आ गया हम लोगों ने बैग लिया और बाहर की ओर के लिए निकल गए। बहुत सुंदर नजारा था बेंगलुरु बहुत ही फ्लीज़ेंट मैं तो गर्मी से इतनी परेशान हो गई थी कि मुझमें कुछ सोचने समझने की शक्ति नहीं लग रही थी। लेकिन यहां आकर एक एनर्जी मिली और बहुत ही सुंदर लगा हम सभी अपने गाड़ी की ओर बढ़ने लगे मुझे बहुत मन था यहां के बस में चढ़ूं और संयोग देखिए वह सामने बस खड़ी थी। ए सी बस और हम लोग उसमें सवार हो गए और मुझे लगता है एयरपोर्ट से घर आने में लगभग ढाई घंटे लगे क्योंकि बेंगलुरु बहुत ही व्यस्त शहर है और यहां पर जाम अधिक होता है तो उन सब को झेलते हुए हम लोग लगभग रात के 9:30 पहुंचे। हम बस से जैसे ही उतरे सामने में मेरा छोटा बेटा शाश्वत खड़ा था। बता नहीं सकती कितना बढ़िया लग रहा था। हम सभी घर आए। अपने घर पहुंच कर बहुत मजा आया । शाश्वत ने बहुत सुंदर से घर को बैलून से सजाया था उसने बहुत अच्छे-अच्छे खाना भी बनाया था। बहुत मजा आया सारी थकान लगता है उसे देखते ही दूर हो गई।यह हवाई यात्रा एक संस्मरण बनकर हमारे मस्तिष्क में घूमता रहेगा जीवन पर्यन्त और आपको एक बात बताऊं सबसे दुखद बात क्या हुई मेरे साथ मैंने बहुत ही खूबसूरत वीडियो बनाया था और उसे मैंने एक जगह सेव भी कर लिया था पता नहीं शायद गूगल में कहीं छिपा हो और मैं कामना करती हूं कि मुझे वह वीडियो मिल जाए। लेकिन यहां आकर मेरा मोबाइल कुछ काम कर नहीं कर रहा था ।

आप लोग घबराईए मत अगली बार जब मैं बेंगलुरु से पटना के लिए उड़ान भरूंगी तो जरूर सुंदर सा वीडियो बनाकर रखूंगी आपको भी दिखाऊंगी और यह हमारे पास एक संस्मरण बन कर रहेगा।

अंजु भारती

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

विकसित भारत
विकसित उत्तर प्रदेश

"मां भारती की सेवा में सर्वस्व न्योछावर करने वाले वीर सपूतों, स्वातंत्र्य समर के ज्ञात-अज्ञात सेनानियों को शत-शत नमन। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में **'सबका साथ-सबका विकास'** के मंत्र को आत्मसात कर भारतवर्ष प्रगति के नए पथ पर गतिमान है। आइए, हम सब मिलकर विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प लें। यही राष्ट्र निर्माताओं के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।"

जय हिंद!

78 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

- योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

मिशन रोजगार के अंतर्गत 6.50 लाख+ सरकारी नौकरियां | किसानों को नलकूप से सिंचाई के लिए मुफ्त बिजली | 1 करोड़+ महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों द्वारा रोजगार | 56 लाख+ गरीब परिवारों को पक्के घर का उपहार | 2 एम्स 65 मेडिकल कॉलेज संचालित | 15 एयरपोर्ट संचालित 6 निर्माणाधीन | 6 एक्सप्रेसवे संचालित 7 निर्माणाधीन

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश